Impact Factor : 1.021 Peer-Reviewed Journal ISSN : 2278 – 5639
Global Online Electronic International Interdisciplinary Research Journal (GOEIIRJ)
{Bi-Monthly} Volume – IV, Issue – I June 2015

हिंदी साहित्य एवं स्त्री

Dr. Kalpana J. Modi,
P.V.D.T. College of Education for Women,
S.N.D.T. Women's university,
1, Nathibai Thakersey Road, New Marine Lines,
Mumbai - 400020.

प्रस्तुत शोध आलेख में कविओं ने अपने काव्यो में नारी को विविध रूप में चित्रित किया है उसकी चर्चा की गई है । नारी मानव सृष्टि की अनुपम देन है । यह सृष्टि का साधन और प्रकृति का मूर्त रूप होकर पुरूष के लिए सौन्दर्य, प्रेम, अनन्यता और आनन्द का कारण बनती है । अपने विविध रूपों से नारी ने पुरूष को संवर्धन, प्रोत्साहन और शक्ति देती है । वह समाज में पुरूष के लिए कभी जननी तो कभी सहचरी, सहयोगिनी अथवा अर्धांगिनी के रूप में, तो कभी स्नेह की भावधारा को प्रवाहित करने वाली भगिनी के रूप में लक्षित होती हैं । सृष्टि के विकास में नारी का बहुत बडा योगदान है ।

प्रस्तावना :–

भारतीय साहित्य में नारी को पूज्य माना गया है, यही नहीं 'यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमन्ते तत्र देवता' की प्रंस्थापना कर उसे सम्मानित किया गया है । वैदिक काल में भारतीय समाज में नारी का सशक्त व्यक्तित्व सर्वत्र दृष्टिगत होता है । वैदिक युग में आत्मिक विकास की दृष्टि से स्त्रियाँ पुरूषों के साथ विचरण करती दिखायी है । धार्मिक क्षेत्र में भी नारियों को पुरूषों के समान ही अधिकार प्राप्त थे । उसे वेद, मंत्र की ऋचाओं में भाग लेने, गोष्ठियों में स्वतंत्रता से भाग लेने व धार्मिक कार्यों को करने की पूर्ण स्वतंत्रता थी, परिणामत: इस युग की नारी को जितना सम्मान प्राप्त हुआ उतना अन्य किसी युग की नारी को प्राप्त न हो सका ।

नारी की दशा उत्तरोत्तर हीन होती चली गई । उपनिषदों और ब्राह्मणों के युग में स्त्रियों के धर्मिक अधिकार समाप्त कर दिए गए । सूत्रों महाकाव्यों और स्मृतियों के युग में स्त्रियों का सम्मान सैद्धांतिक रूप तक ही रह गया था । महाभारतकालीन विचार दो रूपों में प्रगट हुए । एक और स्त्री महत्ता का गान हुआ,

''स्त्रियाँ लक्ष्मी–स्वरूपणी हैं अत: धनकामी व्यक्तियों को स्त्रियों का सत्कार करना चाहिए''दूसरी ओर उसे सब दोषों का मूल बताया गया ।

श्रृंगाररस एवं नारी :–

ऐसी बदलती हुई परिस्थितियों में हिन्दी काव्य का जन्म हुआ । जैन और नाथ कवियों ने उसे योग मार्ग की बाधा माना । नारी के आंतरिक सौन्दर्य, उसके शील और सद्गुणों का ह्रास हो चुका था, वह कामोपभोग की साधिका मात्र रह गई थी । राजाओं को अपने सुख–ऐश्वर्य के कारण नारी के वास्तविक रूप को देखने का अवकाश नहीं था, परिणामत: पुरूष ने नारी के बाह्य कलेवर को अपनाकर उसके रूप–सौन्दर्य से प्रभावित होकर उसे विलास की वस्तुमात्र से अधिक कुछ न समझा ।

सूफी और भक्ति रस एवं नारी :–

भक्त कवियों का दृष्टिकोण भी नारी के प्रति अलग–अलग देचने को मिलता है । सूफी काव्य में एक ओर यदि नारी को भोग और माया का मूल माना है, तो दूसरी ओर परमात्मा का प्रतीक । तुलसी ने अपने आराध्य राम के अनुकूल सात्विक विचारों को रखने वाली नारियों का चरित्रांकन अत्यंत उदार दृष्टि से किया है । सीता पतिव्रता नारियों का आदर्श रूप है । पति के सहचर्य में वन के दु:खों में भी सुख का अनुभव करती है । वन के कंटक भी उसे सुमनवत् लगते हैं । पति बिना वह सभी नाते व्यर्थ मानती है ।

''मातु पिता भगिनी प्रिय भाई । प्रिय परिवारु सुहृदय समुदाई ।
प्राणनाथ तुम्ह बिन जग माही । मों कहुं सुखद कतहूं कछु नाहीं ।।''

मानस में सुमित्रा और कौशल्या दोनों ही आदर्श माता हैं । धर्म का उपदेश देने वाली ऋषि पत्नी अनसूया, राम द्वारा विशेष कृपा की भाजन शबरी, 'मात' शब्द से सीता द्वारा सम्बोधित की जाने वाली त्रिजटा तथा राम सीता के प्रति स्नेह भावना रखने वाली ग्राम नारियाँ तुलसी के आदर भाव की पात्र हैं । तुलसी के अतिरिक्त अन्य रामभक्त कवियों ने अपने आराध्य देव की उपासना नारी के किसी न किसी रूप स्वीकार कर उसी भावना से की है ।

सूरदास रचित कृष्ण काव्य में माता का सरस, सहज और वात्सल्यपूर्ण रूप प्रमुख है ।

अलौकिक दृष्टि से सूरदास ने नारी को सामान्य स्त्री न कहकर भगवान की आनन्द प्रसारिणी शक्ति ही बताया है

रीतिकाल एवं नारी :–

भक्तिलाल के निवृत्तमार्गी दृष्टिकोण के विपरीत रीतिकाल के कवियों के लिए नारी कविता का केन्द्र–बिन्दु हो गई । भक्तिकाल की अनासक्ति तथा विरक्ति रीतिकाल में घोर आसक्ति और अनुरक्ति में परिवर्तित हो गई । इस श्रृंगारिकता का केन्द्र नारी थी, अत: रीतिकाल में नारी के श्रृंगारपरक रूप का चित्रण किया गया है । रीतिकालीन कवियों ने अपने आश्रित राजाओं की विलासी प्रवृत्ति की तृप्ति के लिए श्रृंगारिक काव्य की रचना की ।

हिन्दी साहित्य के उपन्यास में नारी :–

नारी के चित्रण में निश्चित आदर्शों का अभाव था । नारी का मानवी रूप पूर्णत: प्रतिष्ठित नहीं हो पाया था, या तो नारी केवल देवी थी या फिर कुलटा । नारी का केवल एक ही रूप प्रेमिका रूप तत्कालीन समाज में प्रधान था। नारी के अन्य रूप माँ, बहन,भाभी सब प्रेम की एकान्तिक विलासात्मक साधना में छिप से गए थे ।

इन नारी पात्रों में नारी का प्रेमिका रूप ही प्रधान रहा है ।

प्रेमचन्द के नारी पात्र :–

भारतीय जीवन का वास्तविक स्वरूप प्रेमचन्द्र के नारी पात्रों में प्रदर्शित होता है । उनकी अपनी मान्यताएँ हैं, अपने आदर्श हैं, अपने विचार हैं और अपने दृष्टिकोण हैं । उनके जीवन की समस्त आशा निराशएं सुख–दु:ख जैसे हमारी आँखों के सामने मूर्त हो उठते हैं । प्रेममचन्द अपने नारी पात्रों द्वारा प्राय: सभी युगों का प्रतिनिधित्व करते हैं; भूत, वर्तमान सभी काल प्रेमचन्दन के उपन्यासों में मूर्त हो उठते हैं ।

समापन :–

प्रारम्भ से वर्तमान युग तक नारी अपने शाश्वत रूप में ही रही किंतु समाज में उनका स्थान सदैव एक–सा नहीं रहा है । वैदिक काल की समाहत, स्वतंत्र, ज्ञानसम्पन्न तथा पुरूषों के समान अधिकारों को प्राप्त की हुई नारी, वैसी नहीं रह सकी । वह अपने अधिकार तथा स्वतंत्रता को बनाए रखने में असमर्थ रही । वीरगाथा काल में नारी के श्रृंगारिक रूप की प्रधानता थी । आज भारतीय नारी के समक्ष देश का विस्तृत विकासोन्मुख क्षेत्र है, जीवन के अनेक प्रश्न हैं । नारी अपने खोए व्यक्तित्व को ने पुन: प्राप्त करने निरन्तर आगे बढ रही है ।